विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 01-07-2021

वर्ग- सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

हिंदी अर्थ सहित बताए गए, बच्चों पढ़कर अर्थ याद रखें।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः! न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः !"

सभी कार्य परिश्रम से सिद्ध होते हैं न कि सोचते रहने से। जिस प्रकार सोते हुए शेर के मुख में हिरण आदि जानवर स्वयं प्रवेश नहीं करते, अपितु शेर को स्वंय शिकार करना पड़ता है ठीक उसी प्रकार हमें भी वांछित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लगनशील होकर परिश्रम करना चाहिए।

यथा हि एकेन चक्रेण

न रथस्य गतिर्भवेत्।

एवं पुरूषकारेण विना

दैवं न सिध्यति॥

जिस प्रकार एक पहिये वाले रथ की गति संभव नहीं है, उसी प्रकार पुरुषार्थ के बिना केवल भाग्य से कार्य सिद्ध नहीं होते हैं।

चन्दन शीतलं लोके , चन्दनादपि चन्द्रमा : |

चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधु सगंति : ||

अर्थात : - संसार में चन्दन को शीतल माना जाता है | लेकिन चंद्रमा चंदन से भी शीतल होता है | अच्छे मित्रों का साथ चन्द्रमा और चंदन दोनों की तुलना में अधिक शीतलता देने वाला होता है |

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तेषु भोजनम्।

वृथा दानं धनाढ्येषु वृथा दीपो दिवाऽपि च।।

अर्थात- समुद्र में हुई वर्षा का कोई मतलब नहीं होता, भरपेट खाकर तृप्त हुए व्यक्ति को भोजन कराने का कोई मतलब नहीं होता, धनाढ्य व्यक्ति को दान देने का कोई मतलब नहीं होता और सूर्य के प्रकाश में दिया जलाने का कोई मतलब नहीं है।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।*

स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

पानी की एक एक बूंद भी निरंतर गिरने से घड़ा भर जाता है, उसी प्रकार धीरे धीरे अभ्यास करने से सब विद्याओं की प्राप्ति हो जाती है, एवम् थोड़ा थोड़ा करके ही धर्म और धन का संचय भी हो जाता है।

अलसस्य कुतो विद्या , अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम् , अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥

अलसस्य कुतो विद्या , अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम् , अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥ अर्थात् :

आलसी को विद्या कहाँ अनपढ़ / मूर्ख को धन कहाँ
निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ